वर्तमान परिवर्तन के दौर में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की प्रांसगिकता

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

शोध सारांश

स्वामी विवेकानंद का कहना था कि धन, विद्या और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रत्येक को समान रूप से मिलना चाहिए। जब तक समाज का एक भी व्यक्ति अशिक्षित, दुर्बल और कुसंस्कारित है, तब तक हर शिक्षित व्यक्ति, जो उनके लिए काम नहीं करता विश्वासघाती है। संसार को मनुष्यता के पथ पर आगे ले जाने का काम केवल भारत ही कर सकता है और भारत की ओर से यह महान कार्य तेजस्वी, ब्रह्मचारी और तपस्वी युवकों के द्वारा ही सम्पन्न होगा। आप चाहते थे कि मनुष्य को केवल मनुष्य होना चाहिए, बांकी सब कुछ अपने आप हो जाएगा। स्वामी विवेकानंद ने आवाहन किया कि आज हमें आवश्यकता है वीर्यवान, तेजस्वी, श्रद्धासंपन्न और दृढ़ विश्वासी युवकों की। ऐसे युवक मिल जाएँ तो संसार का कायाकल्प हो जाएगा। वे चाहते थे कि ऐसे युवक निकलकर, संगठित होकर मानव के कल्याण के लिए कार्य करें। स्वामी विवेकानंद ने मानव की आत्मा और गरिमा की वास्तविकता को समझ लिया था और इसके बल पर स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था। धर्मनिरपेक्ष समाज में स्त्रियों का गौरवपूर्ण स्थान, गरीबों की मुक्ति, पददलितों के शोषण उन्मूलन इत्यादि के स्वामी विवेकानन्द कट्टर समर्थक थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को 'मानव' और 'इंसान' बना सके। मैं अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति को निराशावादी हो जाना भले ही पसंद कर लूँ, अंधविश्वासों में डूबा, मूर्ख होना कदापि पसंद नहीं करूँगा।

Key Words: *वर्तमान ,परिवर्तन, स्वामी विवेकानन्द, धर्मनिरपेक्ष समाज, जनचेतना में जाग्रति,विचारों की प्रांसगिकता*

स्वामी विवेकानन्द बहुमुखी प्रतिभा के धनी महामानव सन्त ही नहीं, एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव–प्रेमी भी थे। आपने न केवल भारत की सामाजिक स्थिति पर अपने विचार प्रस्तुत किये बल्कि आपने राजनैतिक, शैक्षिक, दार्शनिक समाजवादी एवं अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर बेहद सारगर्भित विचार रखकर बार–बार विश्व के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया। आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व तथा जीवन दर्शन को समझने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में दिये गये विचारों का अवलोकन करना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द के जीवन और चिन्तन के मंथन के आधार पर यह कहा जा सकता कि देश में पुनर्जागरण का मंत्र फूंकने में और देशवासियों को शक्ति तथा निर्भयता का मार्ग प्रशस्त करने में आपकी अहम भूमिका रही। रामकृष्ण मिशन की स्थापना द्वारा आपने राष्ट्रीय

जीवन में वेदान्तवाद का प्रचार किया और विश्वबन्धुत्व का संदेश दिया।

अभिव्यक्ति के स्तर पर मनुष्य, पशु, जड़, अन्य प्राणियों में अन्तर है लेकिन प्रादुर्भाव का स्रोत सब एक ही है। स्वामी विवेकानन्द कहना था कि जीवात्म में अनन्त शक्ति अव्यक्त भाव में निहित है। चींटी से लेकर ऊँचे से ऊँचे सिद्ध पुरूष तक सभी में वह आत्मा विराजमान है और भेद जो कुछ है वह केवल प्रकाश के तारतम्य में है। चिंतकों को प्रायः दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है (1) आध्यात्मवादी (2) भौतिकवादी। आध्यात्मवादी चिंतन भौतिक जगत से परे एक अतीन्द्रिय परमसत्ता को स्वीकार करते हैं। जबकि भौतिकवादी विचारक इस जगत को ही सब कुछ मानते हैं। उनके अनुसार सृष्टि का संचालन गुरुत्वाकर्षण के कुछ सिद्धान्तों से होता है। संसार में सुख–दुख का कारण मनुष्य की अपनी समस्या है। इसके लिए किसी बहिरंग सत्ता को उत्तरदायी ठहराना विवेकसंगत नहीं है। आध्यात्मवादियों और भौतिकवादियों में किसका मार्ग सर्वश्रेष्ठ है, यह कहना कठिन है। सम्भवतः दोनों के योग में ही विश्व का कल्याण है। स्वामी विवेकानंद जी इसी वेदान्त एवं योग के प्रखर प्रवक्ता माने जाते हैं।

अमेरिका से लौटकर आपने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा था कि ''नया भारत निकल पड़े मोची की दुकान से, भड़भूँजे के भाड़ से, हाट से, बाजार से, निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से।'' और जनता ने स्वामीजी की पुकार का उत्तर दिया। वह गर्व के साथ निकल पड़ी। गान्धीजी को आजादी की लड़ाई में जो जन–समर्थन मिला, वह विवेकानन्द के आह्वान का ही फल था। इस प्रकार वे भारतीय के भी एक प्रमुख प्रेरणा स्रोत बने। आपका विश्वास था कि पवित्र भारत वर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्यभूमि है। यहीं बड़े–बड़े महात्माओं व ऋषियों का जन्म हुआ, यही संन्यास एवं त्याग की भूमि हैं तथा यहीं केवल यहीं आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य के लिये जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। आपके कथनानुसार– ''उठो, जागो, स्वयं जागकर औरों को जगाओ। अपने नर–जन्म को सफल करो और तक तक नहीं रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये।''युवाओं में एक नया जोश पैदा करता है।

जिस समय राष्ट्र उदासीनता, निष्क्रियता और निराशा में डूबा हुआ था, उस समय विवेकानंद ने शक्ति तथा निर्भयता के संदेश की गर्जना की। आपने लोगों को शक्तिशाली बनने की प्रेरणा दी। शक्ति ही विवेकानंद की भारतीय राष्ट्र की वसीयत है। तत्कालीन समस्याओं एवं व्यक्तित्व निर्माण के लिए स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए केवल करना शेष रह जाता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था,जीवन में एक ही लक्ष्य साधो और दिन– रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और फिर जुट जाओ उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए। हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। प्रयत्न करते रहो, जब तुम्हें अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखता हो, तब भी मैं कहता हूँ कि प्रयत्न करते रहो ! किसी भी परिस्थिति में तुम हारो मत,बस प्रयत्न करते रहो! तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य जरूर मिलेगा ,इसमें जरा भी संदेह नहीं । आप कहा करते थे कि आदर्श को पकड़ने के लिए सहस्त्र बार आगे बढ़ो और यदि फिर भी असफल हो जाओ तो एक बार नया प्रयास अवश्य करो। इस आधार पर सफलता सहज ही निश्चित हो जाती है।

सामाजिक क्षेत्र में आज हमारा देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जहाँ एक ओर देश की अधिकांश जनसंख्या युवाओं की हैं, वही दूसरी ओर समाज में नैतिकता का पतन हो रहा हैं। भ्रष्टाचार, जातिपाति, महिलाओं के प्रति अत्याचार आदि समस्यायें देश के सम्मुख हैं। ऐसे

में स्वामी विवेकानन्द के विचार ही प्रेरणा श्रोत हो सकते हैं, क्योंकि आपके विचार मूल्यों पर आधारित हैं जिनमें, साहस, त्याग तथा मानवता का तत्व निहित है। स्वामी विवेकानन्द ने जनचेतना में जाग्रति पैदा कर उनके अंदर उत्साह का संचार किया। आपने समाज में मौजूद धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषमताओं की तीव्र आलोचना की। पराधीन भारतीय समाज को स्वामी विवेकानन्द ने स्वार्थ, प्रमाद व कायरता की नींद से झकझोर कर जगाया और कहा कि मैं एक हजार बार सहर्ष नरक में जाने को तैयार हूँ यदि इससे अपने देशवासियों का जीवन–स्तर थोडा–सा भी उठा सकूँ। स्वामी विवेकानंद ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से हमेशा भारतीय युवाओं को उत्साहित किया है। आपके उपदेश आज भी संपूर्ण मानव जाति में शक्ति का संचार करते हैं। आपके अनुसार, किसी भी इंसान को असफलताओं को धूल के समान झटक कर फेंक देना चाहिए, तभी सफलता उनके करीब आती है। स्वामी विवेकानंद ने अशिक्षा, अज्ञान, गरीबी तथा भूख से लडने के लिए अपने समाज को तैयार किया और साथ ही आपने राष्ट्रीय चेतना जगाने, सांप्रदायिकता मिटाने, मानवतावादी संवेदनशील समाज बनाने के लिए एक आध्यात्मिक नायक की भूमिका भी निभाई।

स्वामी विवेकानन्द ने नारी उत्थान पर भी बल दिया। स्वामी विवेकानन्द के समय में नारी की दशा दयनीय हो उठी थी। उनकी अवमानना पराकाष्ठा पर पहुंच चुकी थी। आपका सरल हृदय इस अन्याय पूर्ण व्यवहार पर विद्रोह कर उठा। स्वामी जी ने अपने दर्शन में नारी को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आपने नारी उत्थान की दिशा में नारी अशिक्षा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध आदि कुप्रथाओं पर कुठाराघात कर समाज की इन बुराइयों के विरूद्ध खड़ा होने पर विशेष बल दिया। आपने नारी का अपमान करने वाले धर्म के ठेकेदार पुरोहितों की कटु आलोचना करते हुए कहा कि देश के पतन का कारण है नारी को उसके अधिकारों से वंचित रखना और जब तक स्त्री और पुरूष में इतना भेद रखा जायेगा तब तक देश निश्चित रूप से उन्नति नहीं कर सकता। आपने कहा कि स्त्री–पुरूष क्षमताओं की दृष्टि से समान होते हैं। आपने जोर देकर कहा कि''भारत में शिक्षित और धार्मिक माताओं के ही घर में महापुरूष जन्म लेते हैं।'' स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि शिक्षा द्वारा स्त्री को यह समझाया जाना चाहिए कि उनका आदर्श सीता, सावित्री व दमयन्ती है और सतीत्व ही नारी जीवन की शक्ति है। आपने स्त्रियों को इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गृहकला, स्वास्थ्य रक्षा, शिशुपालन, पुराण आदि विषयों की शिक्षा देने पर बल दिया है। इसके अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि स्त्री शिक्षा का विस्तार धर्म को केन्द्र मानकर करना चाहिए। अतः धार्मिक शिक्षा, चरित्र गठन, ब्रह्मचर्य पालन इन्हीं की ओर ध्यान देना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द ने सामाजिक प्रगति में बाधक अंशविश्वासों तथा अनुपयोगी मान्यताओं को समाप्त करने का आह्वान किया। अपनी विदेश यात्रा के द्वारा आपने समुद्री सफर पर बंधक तथा विदेशियों के साथ खान–पान से अशुद्ध हो जाने की मान्यताओं का विरोध किया। स्वामी विवेकानन्द जी ने धर्म को भारत की आत्मा का केन्द्र बिन्दु घोषित किया। आप धर्म के आधार पर मनुष्य में दया, स्नेह, सेवा, क्षमा, त्याग तथा सहानुभूति आदि भावनाओं को जागृत करना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द स्वामी जी ने भारत के युवा वर्ग को शक्ति, स्वाबलंबन और संगठन का संदेश दिया। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख ध्येय नैतिक चरित्र का विकास करना है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि''आज हमें जिसकी वास्तविक आवश्यकता है, वह है–चरित्रवान स्त्री–पुरूष की। किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा बहुत कुछ उसके चरित्रवान नागरिकों पर

निर्भर करती है।''आज भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवा हैं। सत्तर फीसदी भारतीय पैंतीस साल से कम के हैं। युवाओं के बल पर ही विश्व में भारत के सर्वशक्तिमान बनने की बातें की जाती हैं लेकिन ये बातें तब तक साकार रूप नहीं लेंगी जब तक भारत की युवा आबादी नई सोच और सकारात्मक ऊर्जा से भरी नहीं होंगी। आपका मानना था कि सबसे पहले हमारे युवकों को सबल बनना चाहिए। धर्म तो बाद की चीज है। तुम गीता पढ़ने के बजाय फुटबाल खेलकर स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच सकते हो, यदि तुम्हारा शरीर स्वस्थ्य है, अपने पैरों पर दृढ़तापूर्वक खड़े हो सकते हो, यदि तुम अपने भीतर मानव शक्ति को अनुभव कर सकते हो तो तुम उपनिषदों और आत्मा की महत्ता को अधिक अच्छी प्रकार समझ सकते हो। आजकल संसार भर में तुम्हीं जड़ के समान पड़े हो। तुमको भौतिक जगत बिल्कुल मन्त्र मुग्ध कर रहा है, बहुत प्राचीन समय से औरों ने तुमको बताया है कि तुम में कोई शक्ति नहीं है और तुम भी यह सुनकर सहस्त्रों वर्षों में अपने को समझने लगे हो कि तुम हीन हो, निकम्मे हो, ऐसा सोचते ही तुम वैसे ही बन गये हो। मेरा मूल मंत्र है–व्यक्तित्व का विकास करना, शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उपयुक्त बनाने के सिवाय मेरी और कोई उच्चाकांक्षा नहीं हैं मेरा ज्ञान अत्यन्त सीमित हैं, मैं उस सीमित ज्ञान की शिक्षा बिना किसी संकोच के बनाये रखता हूँ। जिस विषय को मैं नही जानता हूँ उक्त विषय पर मेरा कोई ज्ञान नहीं है। आज जरूरत है युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक सोच और दिशा देने की। इसके साथ ही एक ऐसे नेतृत्व की जो स्वामी विवेकानन्द की तरह ऊर्जावान हो और सबसे बड़ी बात कि सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर हो। स्वामी विवेकानन्द जी ने विशेषकर युवाओं को कर्म योग के मार्ग पर चलने का आह्वान किया – उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति के बिना रूको मत। यहाँ स्वामी जी का तात्पर्य पवित्र लक्ष्य को प्राप्त करने से है न कि भौतिकतावादी क्षण भंगुर सफलताओं से है।

संदर्भ ग्रथ सूची

- पाण्डेय, प्रो0 रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2008
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- शर्मा डॉ0 योगेंद्र,भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 सी0 एल0 बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005
- सिंह, डॉ0 ओ0 पी0,शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2012
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- चौबे, प्रो0 एस0पी0, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2010
- सिंह, डॉ0 कर्ण ,विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी,2011–12
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013